1. येशु पर विश्वास करो

येशु पर विश्वास करो, तुम लज्जित न होगे कभी
उसकी आज्ञा पर चलो, पाओगे सब कुछ तभी
वो है आदि, वो है अन्त, उसके द्वारा पायें जीवन
उसके द्वारा पायें हम जीवन, शान्ति,प्रेम,आनन्द (2)

i) जब तुम घबराओगे, तब वो धीरज देंगे
जब चिन्तित होओगे, तब शान्ति वो देंगे
क्योंकि कहते येशु, 'तुम न घबराना,
स्वर्गिक शान्ति मुझसे तुम लेना,
मैं रहता तेरे संग फिर किससे है ड़रना ।'

ii) जब राह से भटकोगे, सही राह दिखाएँगे
संकट में जब होगे, तो तुम्हें बचाएँगे
क्योंकि कहते येशु, 'तुम सब हो मेरी भेड़,
मैं हूँ तुम्हारा सच्चा चरवाहा
जिनके लिए मैं दे देता अपनी जान ।'

iii) जब तुम रोओगे, वह तुम्हें हँसाएँगे
जब दु:ख में डूबोगे, तो खुशी तुम्हें देंगे
क्योंकि कहते येशु, 'हो दोस्त तुम मेरे
मेरे आनन्द के तुम भी भागी बनो
तुम सब मेरे प्यार में बने रहो ।'

2. अच्छा चरवाहा

अच्छा चरवाहा प्रभु ही मेरा
सच्चा चरवाहा येशु है मेरा (2)
काँटों में फँसा हुआ मैं एक मेमना
राह से जब मैं भटक गया, येशु पास आया
कन्धों पर उठा लिया, फिर अपने घर ले आया
कन्धों पर उठा लिया, अपने घर लाया (2)

i) मुझे किसी भी बात की कमी नहीं, कमी नहीं
मुझे किसी भी बात की चिन्ता नहीं, चिन्ता नहीं
जहाँ-जहाँ है हरियाली, वहाँ मुझे वह बैठाता
शीतल जल है बहता जहाँ, वहाँ बुझाता मेरी प्यास

ii) बादल का खम्भा बन कर दिन में तू छाया देना
अग्नि की ज्वाला बन कर रात में मार्ग दिखा देना
हाथ पकड़ कर तू ले चल, रहना हमेशा मेरे संग
तेरी कृपा से घिरा रहूँ, जीवन भर, मैं जीवन भर

3. ले लो प्रभु भेंट हमारी

ले लो प्रभु, भेंट हमारी, तेरे चरण रखते हम
खुशियाँ और गम, ये तन और मन,
सब कुछ चढ़ाते हैं हम

i) पापों का मैल सब धुल जाये अब (2)
पत्थर-सा दिल मोम बन जाये
मन शुद्ध कर, प्रेम से तू भर,
बन्धनों से तू मुक्त कर, ऐसी कृपा हम पर तू कर।

ii) दिल में हमारे तू बस जाये और (2)
तेरे वचन जीवन लाये,
तेरी सेवा में हम सदा
मिलकर लगें,तुझमें रहें,ऐसी कृपा हम पर तू कर।

4. स्वीकार करो

स्वीकार करो पिता (2)
इस भेंट को तुम स्वीकार करो (2)

i) पापों से भरे मेरे मन को तुम
निर्मल बना दो
मेरे हाथों को स्पर्श करो,मेरे अपराध क्षमा करो (2)
मेरे अपराध क्षमा करो

ii) इस दाखरस को तुम आशीष दो
तेरा पवित्र लहू बना दो
इस रोटी को पवित्र करो,जीवन की रोटी बना दो (2)
जीवन की रोटी बना दो

5. पश्चाताप करो

येशु बुलाते हाथ पसारे कहते हैं वो यूँ हमसे,
'पश्चाताप करो (2)
पश्चाताप करो तुम लोगों, मुझमें तुम विश्वास करो (2)
स्वर्गीय भोज जो है तैयार
उसको तुम स्वीकार करो' (2)

i) 'स्वर्ग से जो आई जीवन की रोटी मैं
खा लो तुम इसको भूख मिटा लो अभी तुम
प्राप्त करोगे तुम अनन्त जीवन (2)
क्योंकि यह भोजन है सच्चा भोजन' (2)

ii) 'मुझको ग्रहण करो, मुझमें निवास करो तुम
पाप मिटाता जो लहू मेरा ले लो तुम

मिलेगा अन्तिम दिन पुनर्जीवन (2)
क्योंकि सच्चा पेय मैं देता तुम्हें' (2)

6. जो कुछ भी

'जो कुछ भी मेरे भाईयों के लिए तुमने किया,
छोटे से छाटे क्यों न हो जो भी है किया -
वह तुमने सब मेरे लिए किया,
सब को करना प्रेम अपने समान'
कहते हैं येशु,
'तो अनन्त जीवन पाओगे, मेरे पिता के ओ प्यारे
स्वर्गराज्य में पहुँचोगे, जो तैयार किया मैंने
सष्टि के पहले से'

i) 'जब मैं भूखा था, तुमने मुझे खिलाया
जब मैं प्यासा था, प्यास बुझा कर तृप्त किया,
अपने जैसा मुझे समझा'

ii) 'जब मैं नंगा था, तुमने मुझे पहनाया
मैं परदेशी था, अपने घर में ठहराया,
अपने जैसा ख्याल रखा'

iii) 'जब मैं रोगी था, मुझ को देखने आये
जब मैं बन्दी था, मुझ से मिलने तुम आये,
मेरे दु:ख सब हैं बाँटे'

7. धन्य कुँवारी माँ! विनती मेरी सुनना

मुक्तिदाता की तू जननी! सबसे प्यारी माँ!
स्वर्ग और पृथ्वी की तू रानी! बनी हमारी माँ
नित्य सहायक माँ! धन्य कुँवारी माँ! (2)
विनती मेरी सुनना

i)सूरज के जैसे वस्त्र ओढ़े, पैरों तले है चाँद तेरे
सुन्दर मुकुट जो पहना तूने, बारह तारे हैं उसमें लगे
ईश्वर की दासी बनकर रही तू,
जीवन की राह दिखाकर गई
अब है बनी सब की रानी, कृपा वर्षा करने वाली
शरण मैं लूँ तेरी (2)

ii)तेरी आँखों से ममता झलके, तेरे हृदय से प्रेम उमड़े
संग-संग मेरे तू प्रार्थना करे, पवित्र माला में शान्ति तू दे
सबके दु:खों को तू ही हरे, अपने भक्तों की रक्षा करे
येशु की माँ! तू है महान्, तेरे आगे हारे शैतान
स्तुति करूँ मैं तेरी (2)

8. सारी सृष्टि करे तेरी स्तुति

सारी सृष्टि करे तेरी स्तुति, विनती सबकी है सुनता तू ही
आत्मा मेरी पाती खुशी, गाके तेरी प्रभु महिमा का गीत
गायें हम सभी होके हम तुझमें लीन
आल्लेलूया, आल्लेलूया

i) पापों से मुक्ति देता तू ही,
कमज़ोरियाँ दूर करता तू ही (2)
तेरे चरण आके सभी पाते प्रभु तुझ से ही मुक्ति (2)

ii) दया दिखाता सबपर तू ही,
रक्षा है करता सब की तू ही (2)
तेरे चरण आके सभी पाते है अदभुत् शान्ति तेरी (2)

iii) रोगों से मुक्ति देता तू ही,
दर्शन दिखाता अपने तू ही (2)
तेरे चरण आके सभी पाते हैं आत्मा पावन तेरी (2)

9. तेरी आराधना मैं सदा करता रहूँ

तेरी आराधना मैं सदा करता रहूँ
मेरे प्रभु मेरे पिता मैं तुझमें रहूँ (2)

i) हे प्रभु! हे प्रभु! तू ही मेरा जीवन, तू ही मेरा मार्ग
ii) हे प्रभु! हे प्रभु! तू ही मेरा स्वामी, सच्चा चरवाहा
iii) हे प्रभु! हे प्रभु! प्रेम का सागर है तू,दया का सागर तू
iv) हे प्रभु! हे प्रभु! शान्ति देता है तू, शक्ति देता तू
v) हे प्रभु! हे प्रभु! पापों से मुक्ति देता तू, मुझे बचाता तू
तेरी आराधना (4) आल्लेलूया (4)

'आल्लेलूया! प्रभु के आदर में नया गीत गाओ,
भक्तों की सभा में उसकी स्तुति करो।'
(स्तोत्र-ग्रन्थ 149:1)

Inspirational Hymns
from Jeevan Dham, 696/Sec-22, Fbd.

WELCOME TO
Jeevan Dham